317hi19

19

राष्ट्रीय राजनीतिक दल

पिछले पाठों में आपने प्रतिनिधित्व के तरीकों और चुनाव प्रणाली के बारे में पढ़ा है। प्रत्येक लोकतांत्रिक समाज तथा सत्तावादी व्यवस्था में राजनीतिक दल होते हैं। एक राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक दल विचारों, अभिमतों तथा पद्धतियों के वाहक के रूप में कार्य करते हैं। दल, नागरिकों और सरकार के बीच तथा मतदाता और प्रतिनिधात्मक संस्थाओं के बीच कड़ी का काम करते हैं। वास्तव में एक सफल लोकतंत्र को अपने पोषण के लिए एक स्वस्थ दलीय व्यवस्था की आवश्यकता होती है। राजनीतिक दल ऐसे उपकरण हैं जिनके माध्यम से नागरिक उन प्रतिनिधियों को चुनते हैं जो सरकार बनाते हैं। वे वैकल्पिक नीतियों के गुण एवं खतरों से नागरिकों को उन्हें अवगत ही नहीं कराते अपितु उन्हें राजनीतिक शिक्षा भी देते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- राजनीतिक दलों का महत्व समझ पाएंगे;
- विभिन्न प्रकार की दलीय व्यवस्थाओं को जान जाएंगे;
- भारतीय दलीय व्यवस्था की विशेषताओं का स्मरण कर पाएंगे;
- राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के सिद्धांतों और उद्देश्यों का वर्णन कर सकेंगे;
- प्रमुख राजनीतिक दलों के सिद्धांतों और उद्देश्यों का वर्णन कर सकेंगे; तथा
- भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था को बनाए रखने में इन राष्ट्रीय दलों की भूमिका को समझ सकेंगे।

19.1 राजनीतिक दलों का अर्थ और भूमिका

मानव जाति ने अपने आप को समूह और इससे बड़े रूपों में संगठित किया है। राजनीतिक दल ऐसे ही मानव संगठनों में से एक है। आधुनिक युग में आदर्श सरकार को किसी न किसी प्रतिनिधात्मक संस्था के माध्यम से चलाया जाता है। सभी प्रतिनिधात्मक सरकारों और संस्थाओं के लिए राजनीतिक दलों का होना आवश्यक है।

राजनीतिक दल लोगों की एक संगठित संस्था है जिनके देश की राजनीतिक व्यवस्था के सम्बंध में सर्वमान्य सिद्धांत और लक्ष्य होते हैं। राजनीतिक दलों का मुख्य उद्देश्य राजनीतिक सत्ता को प्राप्त करना और उसे बनाए रखना होता है। सरकार चलाने वाले राजनीतिक दल को शासक दल कहते हैं। एक संयुक्त (मिली-जुली) सरकार में एक से अधिक शासक दल हो सकते हैं। विपक्ष में बैठने वाले और शासक दल के कार्यों की आमतौर पर अथवा विशिष्ट मुद्दों पर आलोचना एवं विश्लेषण करने वाले राजनीतिक दल को विपक्षी दल कहते हैं। एक राजनीतिक दल में निम्नलिखित आवश्यक विशेषताएं होनी चाहिए:

i) यह औपचारिक सदस्यता वाली लोगों की एक संगठित संस्था होनी चाहिए।

ii) इसकी स्पष्ट नीतियां और कार्यक्रम होने चाहिए।

iii) इसके सदस्यों को इसके सिद्धांतों, नीतियों और कार्यक्रमों से सहमत होना चाहिए।

iv) इसका लक्ष्य लोकतांत्रिक तरीके से सत्ता प्राप्त करना होना चाहिए।

v) इसका स्पष्ट और स्वीकार्य नेतृत्व होना चाहिए।

vi) इसको विस्तृत मुद्दों और व्यापक सरकारी क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 19.1

रिक्त स्थान भरिए–

(क) राजनीतिक दल लोगों की एक संगठित संस्था है जिसका मुख्य उद्देश्य ..... है।
(सत्ता को प्राप्त करना और बनाए रखना/सरकार का दवाब डालना)

(ख) किसी राजनीतिक दल के सदस्य सर्वमान्य, लक्ष्यों और दर्शन से ..... होते हैं।
(सहमत/ असहमत)

(ग) दल ..... और सरकार के बीच एक कड़ी का काम करते हैं। (नागरिकों/संस्थाओं)

19.2 दलीय व्यवस्था के प्रकार

भारत में बहुदलीय व्यवस्था है। भारतीय राजनीति में अनेक राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों का प्रभुत्व है। ऐसे देश भी हैं जहां एक दलीय व्यवस्था अथवा द्विदलीय व्यवस्था है। पूर्व सोवियत संघ और युगोस्लाविया में एक दलीय व्यवस्था थी। इसी प्रकार चीन में एक दलीय व्यवस्था है। पहले जर्मनी में भी केवल एक दल–नाजी पार्टी थी और इटली में भी ऐसा ही था जहां की एकमात्र पार्टी को फासिस्ट पार्टी के नाम से जाना जाता था। द्विदलीय व्यवस्था में दो मुख्य राजनीतिक दल होते हैं। इंग्लैण्ड, संयुक्त राज्य अमरीका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में द्विदलीय व्यवस्था है। वहां अन्य दल हो सकते हैं परंतु उनकी भूमिका प्राय: नगण्य होती है। उदाहरण के लिए; इंग्लैण्ड में दो मुख्य दल लेबर पार्टी तथा कन्जर्वेटिव पार्टी हैं। अमरीका में दो मुख्य दल रिपब्लिकन पार्टी और डेमोक्रेटिक पार्टी हैं। भारत की तरह जापान, फ्रांस, जर्मनी और स्विटजरलैण्ड में बहुदलीय व्यवस्था है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 19.2

रिक्त स्थान भरिए–

(क) पूर्व सोवियत संघ में ..... व्यवस्था थी।

(एक दलीय/बहुदलीय)

(ख) जर्मनी में ..... व्यवस्था है।

(द्विदलीय/ बहुदलीय)

(ग) इंग्लैण्ड की दो प्रमुख पार्टियां .....पार्टी है। (कन्जर्वेटिव और लेबर/रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक)

19.3 भारतीय दलीय व्यवस्था का विकास

भारतीय दलीय व्यवस्था के विकास का प्रारम्भ 1885 में एक राजनीतिक मंच के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से होता है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना औपनिवेशिक शासन के प्रत्युत्तर के रूप में तथा ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए की गई थी।

स्वतंत्रता के बाद लोकतांत्रिक संविधान अपनाने के साथ 1952 में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार पर आधारित प्रथम आम चुनावों के दृष्टिगत एक नई दलीय व्यवस्था उभरी हुई। पिछले पाठ में आपने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के विषय में विस्तार से पढ़ा है। स्वतंत्रता के बाद के समय में दलीय व्यवस्था विभिन्न स्थितियों अथवा चरणों से गुजरी है।

पहली स्थिति को एक दल के प्रभुत्व का दौर कहा जाता है क्योंकि केन्द्र और राज्यों में केवल (1956–59 में केरल का अपवाद छोड़कर) कांग्रेस दल का शासन रहा है। दूसरी स्थिति (1967–75) में भारत ने बहुदलीय व्यवस्था के उद्‌भव को देखा। 1967 के विधान सभा चुनावों में कांग्रेस आठ राज्यों में पराजित हुई। इन राज्यों में पहली बार गैर कांग्रेसी दलों ने संयुक्त सरकार बनाई। 1969 में कांग्रेस (ओ) तथा कांग्रेस (एन) के रूप में विघटन हुआ। परंतु 1971 के मध्यावधि चुनाव जीतने के बाद कांग्रेस एक बार फिर एक प्रमुख ताकत बन गई। तब आपात काल (1975–77) का युग आया जिसे भारतीय लोकतंत्र का सर्वसत्तावादी युग कहा जाता है।

आपात काल हटने के साथ ही कांग्रेस का प्रभुत्व भी समाप्त हो गया। 1977 के आम चुनावों में कांग्रेस को जनता पार्टी ने पराजित किया। कई राजनीतिक दलों के विलय के फलस्वरूप जनता पार्टी अस्तित्व में आई थी। लेकिन 1980 के आम चुनावों के बाद कांग्रेस पुनः सत्ता में लौट आई और 1989 तक सत्ता में बनी रही।

जनता पार्टी: मोरारजी देसाई के नेतृत्व वाली कांग्रेस (ओ), चरण सिंह के नेतृत्व वाले लोकदल, जगजीवन राम के नेतृत्व वाले कांग्रेस फार डेमोक्रेसी, जार्ज फर्नांडीस के नेतृत्व में समाजवादियों और एल. के. अडवानी के नेतृत्व वाले जनसंघ के विलय से उभर कर आई।

1989 के चुनावों में नेशनल फ्रंट ने भाजपा और वाम दलों के सहयोग से सरकार बनाई परंतु ये दोनों दल अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाये और दसवीं लोकसभा के लिए मई–जून 1991 में चुनाव करवाए गए। कांग्रेस ने फिर से केन्द्र में सरकार बनाई। 1996 के आम चुनावों में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के रूप में

उभर कर आई और उसे केन्द्र में सरकार बनाने का अवसर मिला। चूंकि यह निर्धारित समय में अपना बहुमत सिद्ध नहीं कर सकी इसलिए इसे त्यागपत्र देना पड़ा। कांग्रेस और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के बाहरी समर्थन के आधार पर बनी 13 दलों की संयुक्त मोर्चा सरकार भी अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाई। यद्यपि 1998 के चुनावों के बाद भाजपा के नेतृत्व में बनी संयुक्त सरकार को 1999 के चुनावों ने दोबारा सरकार बनाने का अवसर प्रदान किया जिसने बहुदलीय गठनबंधन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एन.डी.ए.) के रूप में अपना कार्यकाल पूरा किया।

2004 के 14वें आम चुनावों में कांग्रेस सबसे बड़े दल के रूप में उभर कर आई और केन्द्र में वाम मोर्चे के समर्थन से गठबंधन की सरकार बनाई। 1989 में प्रारम्भ हुए भारतीय दलीय व्यवस्था का दौर अभी भी चल रहा है और इसे मिली–जुली अथवा गठबंधन की राजनीति का दौर कहा जाता है। कोई भी दल इस दौर में अपने दम पर केन्द्र में सरकार बनाने में सफल नहीं हुआ है।

पाठगत प्रश्न 19.3

रिक्त स्थान भरिए–

(क) भारतीय दलीय व्यवस्था में 1952 से 67 तक के दौर को ..... कहा जाता है।

(ख) 1975 से 1977 तक के समय को ..... युग कहा जाता है।

(ग) 1977 से 1980 तक जनता पार्टी की सरकार को ..... का दौर कहा जाता है।

(घ) एन. डी. ए. सरकार ..... दलों के गठबंधन की सरकार थी।

19.4 राष्ट्रीय दल और क्षेत्रीय दल

भारत में दो प्रकार के दल हैं- राष्ट्रीय दल और क्षेत्रीय दल। राष्ट्रीय दल वे हैं जिनका प्राय: पूरे देश में प्रभाव है। यह आवश्यक नहीं है कि राष्ट्रीय दल सभी राज्यों में समान रूप से शक्तिशाली हों। किसी दल को चुनाव आयोग एक निश्चित सूत्र के आधार पर राष्ट्रीय दल की मान्यता प्रदान करता है। ऐसे राजनीतिक दल को जिसने पिछले आम चुनावों में डाले गए कुल वैध मतों के 6 प्रतिशत से अधिक मत कम से कम चार राज्यों में प्राप्त किए हों उसे राष्ट्रीय दल का दर्जा प्रदान किया जाता है।

राष्ट्रीय दलों की संख्या बदलती रही है। वर्ष 2006 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी, भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी (मार्क्सवादी), भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी, बहुजन समाज पार्टी और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी राष्ट्रीय दल थे।

इन राष्ट्रीय दलों के अतिरिक्त भारत में कुछ अन्य दल भी हैं जिनका राष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव नहीं है। उनकी गतिविधियां और प्रभाव विशेष राज्यों अथवा क्षेत्रों तक सीमित हैं। कभी–कभी ये दल किसी विशेष क्षेत्र की मांगों को उठाने के लिए बनाए जाते हैं। ये दल न तो कमजोर है और न ही अल्पजीवी हैं। कभी–कभी तो ये अपने क्षेत्र में बहुत शक्तिशाली सिद्ध होते हैं। इन्हें **क्षेत्रीय दल** कहा जाता है। तमिलनाडु में ए.आई. ए.डी.एम.के. तथा डी.एम.के., आन्ध्र प्रदेश में तेलुगु देशम, पंजाब में अकाली दल, जम्मू और कश्मीर में नेशनल कांफ्रेस, झारखण्ड में झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, आसाम में असम गण परिषद, महाराष्ट्र में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और शिव सेना प्रमुख क्षेत्रीय दल हैं। क्षेत्रीय दलों के बारे में आप अगले पाठ में पढ़ेंगे।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 19.4

रिक्त स्थान भरिए–

(क) राष्ट्रीय दल को कम से कम ..... राज्यों में डाले गए वैध मतों का 6 प्रतिशत प्राप्त होना चाहिए। (चार/पांच)

(ख) भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी ..... दल है। (राष्ट्रीय/क्षेत्रीय)

(ग) डी.एम.के. एक ..... दल है। (राष्ट्रीय/क्षेत्रीय)

(घ) नेशनल कांफ्रेंस एक ..... है। (राष्ट्रीय/क्षेत्रीय)

19.5 भारत में प्रमुख राष्ट्रीय दल

1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

जैसा कि आप पहले पढ़ चुके हैं कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन 1885 में बम्बई (मुंबई) में हुआ था। डब्ल्यू.सी. बनर्जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अध्यक्ष थे। प्रारम्भ में कांग्रेस मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों की एक संस्था थी जिसका मुख्य लक्ष्य ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन में राजनीतिक सुधार लाना था। 20वीं शदी के दूसरे दशक में महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस एक विस्तृत जनाधार वाली पार्टी बन गई। पार्टी को धीरे-धीरे जनसाधारण का समर्थन मिलने लगा और इसने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता के पश्चात् जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री बने और अपने जीवन के अंत 1964 तक कांग्रेस को नेतृत्व दिया। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि इसे नेहरू युग कहा जाता है। कांग्रेस पार्टी ने प्रथम पांच ग्राम चुनावों 1952, 57, 62, 67 और 71 में लोकसभा में जीत हासिल की। 1975 में राष्ट्रीय आपातकाल स्थिति की घोषणा की गई जो 1977 तक चली। 1977 के चुनावों में कांग्रेस पराजित हुई। परंतु 1980 के चुनावों में कांग्रेस इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में पुनः सत्ता में लौट आई। इन्दिरा गांधी की 1984 में हत्या कर दी गई और अगले आम चुनाव में कांग्रेस बेहतर बहुमत से जीत गई। 1989 के चुनावों मे पार्टी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ परंतु यह सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। 1991 में दसवें आम चुनावों में कांग्रेस फिर से सबसे बड़े दल के रूप में उभरी और केन्द्र में अपनी सरकार बनाई। 1996 में कांग्रेस आम चुनावों के बाद अपनी सरकार नहीं बना सकी। 12वें आम चुनावों में कांग्रेस को केवल 140 सीटें प्राप्त हुईं। 1999 के चुनावों में कांग्रेस की ताकत घटकर 112 सदस्यों तक पहुंच गई। लेकिन 14वें आम चुनाव में कांग्रेस ने अन्य धर्म निरपेक्ष दलों के साथ गठबंधन किया और एक संयुक्त सरकार का गठन किया।

पाठगत प्रश्न 19.5

रिक्त स्थानों को भरिए–

(क) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ..... में हुई थी। (1885/1985)

(ख) महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ..... की संस्था बन गई। (जनसाधारण/ मध्यम/ अमीरों)

(ग) राष्ट्रीय आपात काल ..... में घोषित किया गया। (1975/1976/1977)

2. भारतीय जनता पार्टी

भारतीय जनता पार्टी का गठन 1980 में किया गया। उसके बाद से इसने लगातार अपने प्रभाव क्षेत्र को

हिंदी क्षेत्रों, गुजरात और महाराष्ट्र में बढ़ाया। 1989 के बाद से यह अपना आधार दक्षिण भारत में भी बढ़ाने का प्रयत्न कर रही है। 1980 में अपने गठन के साथ ही भाजपा धीरे-धीरे लोक सभा में अपनी सीटों की संख्या में वृद्धि कर रही है। 1984 के आम चुनावों में इसे केवल दो सीटें प्राप्त हुई थीं। 1989 में सीटों की संख्या बढ़कर 88 हो गई। 1991 के आम चुनावों में भाजपा की लोक सभा में ताकत 122 तक बढ़ गई जो 1996 के चुनावों में 161 तक पहुंच गई। 1998 के चुनावों में इसने 180 सीटे जीतीं और 1999 के चुनावों में इसकी सीटों की संख्या 182 तक बढ़ गई। 1999 के चुनावों में भाजपा ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठनबंधन के एक भागीदार के रूप में चुनाव लड़ा। पिछले 2004 के चुनावों में भाजपा को राजग के एक सहयोगी घटक दल के रूप में आवश्यक बहुमत प्राप्त नहीं हुआ। यह विपक्ष की भूमिका निभा रही है। इसका समर्थन क्षेत्र सारे देश में फैले होने के बजाए कुछ विशेष क्षेत्रों तक ही सीमित है।

3. साम्यवादी दल

भारतीय साम्यवादी दल (सी.पी.आई.) और भारतीय साम्यवादी दल (मार्क्सवादी) दो साम्यवादी दल हैं। कांग्रेस के बाद साम्यवादी दल ही सबसे पुराना राजनीतिक दल है। साम्यवादी आंदोलन 1920 के दशक के प्रारम्भ में शुरू हुआ और 1925 में साम्यवादी दल की स्थापना हो गई। साम्यवादियों ने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया, यद्यपि आमतौर पर उनके कांग्रेस के साथ गंभीर मतभेद थे। साम्यवादियों का मानना था कि लोग आर्थिक रूप से समान होने चाहिए और समाज को गरीब और अमीर में वर्गीकृत नहीं किया जाना चाहिए। मजदूरों, किसानों तथा अन्य मेहनतकश लोगों को जो समाज में उत्पादक कार्य करते हैं, उचित मान्यता और शक्ति मिलनी चाहिए।

पूरे नेहरू युग में साम्यवादी दल ही मुख्य विपक्षी दल था। प्रथम लोक सभा में उनके 26 सदस्य थे। दूसरी और तीसरी लोक सभा में उनके क्रमश: 27 और 29 सदस्य थे। 1957 में सी.पी.आई. (भारतीय साम्यवादी दल) को केरल में पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ और उसने भारत के किसी एक राज्य में पहली साम्यवादी सरकार बनाई। 60 के दशक के प्रारम्भ में विशेष रूप से 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण के बाद भारतीय साम्यवादी दल के सदस्यों में गंभीर मतभेद पैदा हुए। परिणाम स्वरूप पार्टी दो भागों में बंट गई। सी.पी.आई. से अलग होने वालों ने 1964 में सी.पी.आई. (एम) का गठन किया। सी.पी.आई. (एम) का मुख्य समर्थन आधार पश्चिमी बंगाल, केरल और त्रिपुरा में केन्द्रित है यद्यपि इसने आंध्र प्रदेश, आसाम, पंजाब, इत्यादि में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। सी.पी.आई. के प्रभावक्षेत्र आंध्र प्रदेश, आसाम, बिहार, मणिपुर, उड़ीसा, पांडीचेरी और पंजाब इत्यादि में हैं। इसके अतिरिक्त सी.पी.आई. केरल और पश्चिमी बंगाल में वाम मोर्चा गठबंधन का सदस्य रही है। 2004 के लोक सभा चुनावों के बाद सी.पी.आई. और सी.पी.आई. (एम) दोनों ही कांग्रेस गठबंधन की सरकार के समर्थक रहे हैं। वे संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार को बाहर से समर्थन दे रहे हैं।

4. बहुजन समाज पार्टी

बहुजन समाज पार्टी (ब.स.पा.)को 1996 में राष्ट्रीय दल का दर्जा प्राप्त हुआ। बसपा पिछड़ी जातियों, वंचित समूहों और अल्पसंख्यकों के हितों की बात करती है। बसपा का विश्वास है कि इस बहुसंख्यक समाज को ऊंची जातियों के शोषण से मुक्त करवाना चाहिए और उनको अपनी सरकार बनानी चाहिए। बसपा का प्रभाव क्षेत्र उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब आदि में देखा जा सकता है। 1995 और 1997 में बसपा उत्तर प्रदेश में गठबंधन सरकारों में भागीदार थी। लेकिन 2007 में पहली बार इस दल ने बहुमत प्राप्त कर उत्तर प्रदेश में अपनी सरकार बनाई है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 19.6

रिक्त स्थान भरिए–

(क) 1984 के आम चुनावों में भाजपा को लोक सभा में ..... सीटें प्राप्त हुई। (2, 3, 4)

(ख) सी.पी.आई. ने अपनी पहली सरकार ..... राज्य में बनाई। (पश्चिमी बंगाल/केरल/आंध्र प्रदेश)

(ग) बसपा का प्रभाव क्षेत्र.....में देखा जा सकता है। (उत्तर प्रदेश/आंध्र प्रदेश/पश्चिमी बंगाल)

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने भारत में राजनीतिक दलों के बारे में जाना। राजनीतिक दल के अर्थ के साथ-साथ आपने भारत में लोकतंत्र को बनाए रखने में इन दलों की भूमिका के बारे में पढ़ा। दलीय व्यवस्था का सही परिदृश्य स्पष्ट करने के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों की भी चर्चा की गई। भारत में दलीय व्यवस्था के विकास का वर्णन किया गया है। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों की संक्षिप्त परिभाषा देने के बाद मुख्य राष्ट्रीय दलों जैसे कांग्रेस, भाजपा, कम्युनिष्ट पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की विशिष्टताओं का वर्णन किया गया है।

पाठांत प्रश्न

1. राजनीतिक दल की आवश्यक विशेषताएं लिखिए।
2. भारत के किन्हीं दो प्रमुख राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की चर्चा कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

19.1

(क) सत्ता को प्राप्त करना और बनाए रखना

(ख) सहमत

(ग) नागरिकों

19.2

(क) एक दलीय

(ख) बहुदलीय

(ग) कन्जर्वेटिव और लेबर

19.3

(क) एक दलीय प्रभुत्व का दौर

(ख) सत्तावादी

(ग) गठबन्धन राजनीति

(घ) 13 (तेरह)

19.4

(क) चार

(ख) राष्ट्रीय

(ग) क्षेत्रीय

(घ) क्षेत्रीय

19.5

(क) 1885

(ग) जनसाधारण

(घ) 1975

19.6

(क) 2

(ग) केरल

(घ) उत्तर प्रदेश

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. खण्ड 19.3 देखें
2. खण्ड 19.5 देखें

आइए, किशोरों को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर विचार करें।

हम अपनी जीवन शैली में कैसे सुधार करें?

- अपने को समझें और बेहतर महसूस करें। अपनेआप में विश्वास रखें और अपनी ताकत और कमजोरियों को समझें। आत्म-सम्मान की भावना आवश्यक है।
- जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें। सुखद न होने पर भी अनुभवों से सीखने को तत्पर रहें।
- कठिन परिस्थितियों में समस्या का कारण पहचानें तथा बेहतरीन समाधान ढूंढ़ें।
- अपनी समस्याओं को दूसरों के संग बांटिए और जरूरत पड़ने पर, समय पर सहायता प्राप्त करें।
- स्वस्थ जीवन शैली अपनाएं और उत्तरदायी निर्णय लें।
- विश्वस्त सूचना प्राप्त करें तथा सही विकल्प एवं निर्णय चुनें।
- अपने निर्णयों एवं कार्यों के प्रतिफल पर विचार करें।
- दूसरों के अनुभवों से सीखें–औरों की गलतियों से हम लाभ उठा सकते हैं।
- अपनी चिंताओं को माता-पिता, शिक्षक, दोस्तों तथा परामर्श-दाताओं के साथ बांटें और उनकी मदद से अपने को तनावमुक्त रखें।
- अपने सहपाठियों के दबाव में आए बिना 'ना' कहना सीखें।
- एच. आई. वी./ एड्स से पीड़ित लोगों तथा ऐसे व्यक्तियों जिन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, का ध्यान रखें और उनके प्रति सम्मान का भाव रखें।
- प्रजनन समबंधी संवेदनशील स्वास्थ्य पर संवेदनशील जानकारी औरों के संग बांटे।